बाइबल टीचर

वर्ष 19 | दिसम्बर 2021 | अंक 1

सम्पादकीय

कुछ लोग विश्वास से बहक जायेंगे

इसमें कोई संदेह नहीं कि पिछले वर्षों में कुछ लोग अपने विश्वास से बहक गये और कई लोग मसीह की कलीसिया को छोड़कर चले भी गये। जिन स्थानों पर मसीह की कलीसिया विद्यमान थीं, अब वहां कुछ नहीं है। पौलुस ने बहुत पहिले यह बत कह दी थी कि ऐसा समय आयेगा और आप 2 थिस्स 2:3 में पढ़ सकते हैं जहां लिखा है, ''किसी रीति से किसी के धोखे में न आना क्योंकि वह दिन न आएगा, जब तक धर्म का त्याग न हो ले, और वह पाप का पुरुष अर्थात विनाश का पुत्र प्रगट न हो।''

धर्म का त्याग आज सब स्थानों पर संभव है। आज बहुत से लोग विश्वास से इसलिये भी बहक गये हैं क्योंकि उन्हें अपने विश्वास को दृढ़ता से पकड़े रहने की शिक्षा नहीं दी गयी। केवल रीति-रिवाजों की मसीहीयत में ऐसे लोग फंसे रहते हैं। और ऐसे लोगों के विषय में लिखा है कि, ''और जितने लोग सत्य की प्रतिति नहीं करते, वरन अर्धम से प्रसन्न होते हैं, सब दण्ड पाएं, पर हे भाईयो तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें, कि परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया है, कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर और सत्य की प्रतिति करके उद्धार पाओ'' जिसके लिये उसीने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा प्राप्त करो। इसलिये हे भाईयो, स्थिर रहो, और जो-जो बातें तुमने क्या वचन क्या पत्री के द्वारा हम से सीखी है, उन्हें थामे रहो।'' (2 थिस्स 2:3-15)।

विश्वास से बहक जाना बड़ा संभव है। कई लोग मसीह की कलीसिया को छोड़कर साम्प्रदायिक कलीसियाओं में चले जाते हैं। बाइबल कहती है, ''जो अपने आपको समझता है कि मैं स्थिर हूं, वह चौकस रहे; कि कहीं गिर न पड़े'' (1 कुरि. 10:12) इस्त्राएली लोग जो परमेश्वर के अपने लोग थे परमेश्वर के विरोध में हो गये थे और इसके विषय में हम 1 कुरि. में पढ़ते हैं। कलीसिया के प्रत्येक सदस्य को प्रेरित पौलुस से यह सीखना चाहिए वह कहता है, ''इसलिये मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूं, परन्तु बेठिकाने नहीं, मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूं, परन्तु उसकी नाई नहीं जो हवा को पीटता हुआ लड़ता है। परन्तु मैं अपनी देह को मारता-कूटता और वश में लाता हूं;

ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं।'' (1 कुरि. 9:26-27)। यीशु ने एक बार शिक्षा देते हुए कहा था कि कुछ लोग ऐसे बीज के समान है जो चट्टान पर गिरा था, अर्थात वचन को सुनते हैं और आनन्द से वचन को ग्रहण तो करते हैं, परन्तु जड़ न पकड़ने से वे थोड़ी देर तक विश्वास रखते हैं, और परीक्षा के समय बहक जाते हैं (लूका 8:13)। पौलुस ने बहुत पहिले भविष्यवाणी की थी, ''परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहवा है कि आने वाले समयों में कितने लोग भरमाने वाली आत्माओं और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर ध्यान (मन) लगाकर विश्वास से बहक जायेंगे।'' (1 तीमु. 4:1)। पतरस ने कहा था जो लोग अपने विश्वास को छोड़कर कलीसिया से चले जाते हैं, उनकी दशा बद-से-बदतर हो जाती है, ''और जब वे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले, और फिर उनमें फंसकर हार गए तो उनकी पिछली दशा पहिली से भी बुरी हो गई है। क्योंकि धर्म के मार्ग का न जानना ही उनके लिये इस से भला होता, कि उसे जानकर उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते है, जो उन्हें सौंपी गई थीं। उन पर यह कहावत ठीक बैठती है कि जैसे कुत्ता अपनी छांट (उल्टी) की ओर और धोई हुई सुअरनी कीचड़ में लौटने के लिये फिर चली जाती है। (2 पतरस 2:20-22)।

कई कलीसियाएं अपने विश्वास से गिर गई हैं। लोग उपासना में आना पसंद नहीं करते। अधिकतर सदस्य अपने विश्वास में कमजोर पड़ गये हैं। यीशु ने इफिसुस की कलीसिया को कहा था सो तू चेत कर, कि कहां से गिरा है, और मन फिरा और पहिले के समान काम कर, और यदि तू मन न फिराएगा तो मैं तेरे पास आकर तेरी दीवट को उस स्थान से हटा दूंगा। (प्रकाशित 2:5)। कई सदस्यों ने अपना पहिला सा प्रेम जो कलीसिया के प्रति था, उसे छोड़ दिया है। (प्रकाशित 2:2-4)।''

कलीसिया में जो लोग अगुवे हैं उन्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि एक-एक करके मैम्बर चले न जाएं। चर्च लीडर को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि सदस्य अपने विश्वास में दृण हो जायें। कुछ लोग विश्वास से बहक कर दूसरे सुसमाचार की ओर जा रहे थे और तब पौलुस को गलितियां की कलीसिया से ऐसा कहना आवश्यक समझा कि भाईयो तुम ऐसा न करो। (गल. 1:6-7)।

प्रत्येक मसीह की कलीसिया को यह प्रण लेना चाहिए कि यदि सब अपने विश्वास को छोड़ दें, पर हम कभी नहीं छोड़ेंगे। प्रचारक लोगों को ध्यान रखना चाहिए कि झूठे प्रचारक यदि उनके सदस्यों को झूठी शिक्षा देते हैं तो बाइबल से उनका मुंह बन्द किया जाये। (तीतुस 1:9-11)।

यदि किसी कलीसिया में सदस्य कमजोर पड़ गये हैं, तब जो विश्वास में बलवान हैं उन्हें प्रयत्न करना चाहिए कि उनकी सहायता करें ताकि वे वापस आ सकें। प्रत्येक मण्डली में कड़ी शिक्षा दी जानी चाहिए। जिन मण्डलियों में कड़ी शिक्षा नहीं दी जाती वहां सदस्य विश्वास में कमजोर पड़ जाते हैं और कई बार अपने विश्वास से बहकर चले जाते हैं। जहां आप मसीह की कलीसिया में अराधना करते हैं वहां की स्थिति कैसी है? अपनी बाइबल को पढ़ें और अध्ययन करें तथा प्रभु में आगे बढ़ें। यहुदा की इस बात को याद रखिये ''हे प्रियो जब मैं तुम्हें इस उद्धार के विषय में लिखने में अत्यन्त परिश्रम से प्रयत्न कर रहा था जिसमें हम सब सहभागी है तो मैंने तुम्हें ये समझाना आवश्यक जाना कि इस विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था।''

मैं सुसमाचार से नहीं लजाता

सनी डेविड

मित्रो, बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि जब वह समय पास आया था, जबकि यीशु मसीह का क्रूस पर चढ़ाया जाना परमेश्वर की ओर से निश्चित था, तो मसीह ने अपने चेलों के साथ एक अन्तिम और विशेष भोजन खाया था। जिसे आज तक सारे विश्व में "प्रभु भोज" के नाम से जाना जाता है। बहुतेरे इतिहासकारों ने इसके बारे में बड़े ही खूबसूरत शब्दों में लिखा है। चित्रकारों ने इसके बड़े-बड़े सुन्दर चित्र बनाए हैं। और आज भी मसीह के सच्चे अनुयायी दुनिया भर में जहां-जहां भी हर एक एतवार के दिन परमेश्वर की आराधना करने के लिये एकत्रित होते हैं, तो प्रत्येक एतवार को वे प्रभु भोज में अवश्य ही भाग लेते हैं।

प्रभु-भोज में दो चीजें होती हैं, एक तो रोटी और दूसरा अंगूर का रस, या दाखरस। प्रभु भोज पेट भरने के लिये नहीं खाया जाता है, पर यह भोज एक चिन्ह आत्मिक भोज है। बाइबल में लिखा है, कि जब समय निकट आया था, कि मसीह परमेश्वर की इच्छा से और उसकी मर्जी को पूरा करने के लिये, पकड़वाया जाए और क्रूस पर लटकाकर मारा जाए, तो मसीह यीशु ने अपने चेलों से आग्रह करके कहा था, कि तो मसीह यीशु ने अपने चेलों से आग्रह करके कहा था, कि वे एक स्थान पर एक भोज का आयोजन करें। सो जब वे सब भोजन करने बैठे, तो सबसे पहले तो यीशु ने उनके पांव धोए थे, और उनके पैर धोकर उसने उन्हें तौलिये से सुखाया था। पर यीशु के चेलों को इस बात का कतई पता नहीं था कि वही यीशु मसीह कुछ ही घंटों में उन्हीं के सामने पकड़ा जाएगा, और अपराधियों की तरह एक क्रूस पर लटकाकर उन अपराधों के लिये मार दिया जाएगा जो उसने किए ही नहीं थे। पर मसीह ने जब उनके पैर धोए और उन्हें तौलिये से सुखाया, तो यह देखकर चकित रह गए। क्योंकि यीशु को तो वे अपना गुरू मानते थे। पर इस बात से प्रभु यीशु ने उन्हें यह सिखाया था, कि किसी भी इंसान को अपने आप को दूसरों से बड़ा नहीं समझना चाहिए। और जबकि उसने, इतना महान होते हुए भी, एक दास की तरह उनके पांव धोए थे, तो उन्हें भी अन्य लोगों के प्रति ऐसा ही सेवा का व्यवहार रखना चाहिए।

और फिर, बाइबल में लिखा है, कि यीशु ने रोटी ली थी, और परमेश्वर को उसके लिये धन्यवाद दिया, और फिर अपने चेलों को देकर कहा था, कि तुम सब इसमें से खाओ और मेरी देह को याद करने के लिये तुम ऐसा ही किया करना। इसके बाद, यीशु ने दाखरस यानि अंगूर के रस का कटोरा अपने हाथ में लिया था, और अपने चेलों को देकर कहा था, कि तुम सब इसमें से पीओ, क्योंकि यह मेरे उस लोहू का प्रतीक है जिसे मैं जगत के लोगों के पापों की क्षमा के लिये बहाने जा रहा हूं। और वास्तव में उन चेलों ने वैसा ही किया था, जैसा कि मसीह ने उन्हें करने को कहा था। पर उस समय वे सब इस बात को समझ नहीं पाए थे, कि जो यीशु ने उस समय कहा था, उसका वास्तव में अर्थ क्या है। लेकिन, कुछ ही समय के बाद, जब

लोगों की एक भीड़ सरकारी सिपाहियों के साथ मसीह को पकड़ने के लिये आ गई। और उनके देखते-देखते वे यीशु को पकड़कर ले गए और कुछ ही घंटो में उसे उन्होंने क्रूस पर मरते हुए देखा; तो उसके लहू-लुहान शरीर को क्रूस पर देखकर, और उस खून को उसके बदन से बहते हुए देखकर उन्हें यीशु के ये शब्द याद आने लगे, कि "यह मेरी देह है", जो तुम्हारे लिये दी जाती है। और 'यह मेरा लहू है', जो पापों की छुड़ौती के लिये बहाया जाता है। मेरे स्मरण के लिये यही किया करना। (लूका 22:14-23)।

परमेश्वर की बाइबल कहती है, कि उसका पुत्र यीशु मसीह सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने को, उसी की इच्छा से मारा गया था, और गाड़ा गया था, और तीसरे दिन फिर जी उठा था। इसी सुसमाचार को मानकर आरंभ में लोगों को उद्धार मिला था, और आज भी जहां कहीं भी लोग इस सुसमाचार को मानते हैं, तो मसीह, पापियों के लिये अपनी मृत्यु के कारण, उनका उद्धार करता है, यानि अपने उद्धार पाए हुए लोगों की मंडली में मिला लेता है। उसके उद्धार पाए हुए लोगों की मंडलियां सारे संसार में मसीही की कलीसियाएं कहलाती है। और आज भी मसीह की कलीसियाएं पूरे विश्व भर में, सप्ताह के पहले दिन यानि हर एक एतवार के दिन, जिस दिन मसीह मुर्दों में से जी उठा था, जब परमेश्वर की आराधना करने को एकत्रित होती हैं, तो प्रत्येक स्थान पर हर एक मसीह की कलीसिया प्रभु भोज में अवश्य भाग लेती है, ठीक उसी तरह से जैसे कि आरंभ में मसीह की सारी कलीसियाएं किया करती थीं। (प्रेरितों 20:7)। क्योंकि हम परमेश्वर की उपासना ऐतवार के दिन प्रभु-भोज में भाग लिये बिना कर ही नहीं सकते। क्योंकि एतवार के दिन, सप्ताह के पहले दिन मसीह जी उठा था, पर जी उठने से पहले वह हमारे पापों के बदले में मारा गया था। उसने अपनी देह हमारे लिये दे दी थी; और अपना खून हमारे लिये बहा दिया था।

पर कुछ लोगों को यह समझने में और मानने में बड़ी ही उलझन सी महसूस होती हैं, कि यीशु मसीह के मरने से हमें जीवन कैसे मिल सकता है? लेकिन, दूसरी ओर, हम अपने प्रतिदिन के जीवन में साक्षात देखते हैं, कि हमें शारीरिक बल, शक्ति और आराम देने के लिये रोजाना हजारों चीजों को मरना पड़ता है। इस बात पर विचार करें, कि हर एक दिन कितने पेड़ काटे जाते हैं। पक्षी और पशु काटे जाते हैं कि उन्हें खाकर, लोगों को बल, शक्ति और जीवन मिल सके। वास्तव में, बिना मृत्यु के जीवन ही नहीं है। जहां मृत्यु है वहां जीवन है, और जहां मृत्यु नहीं है, वहां जीवन भी नहीं है।

और यीशु मसीह परमेश्वर की इच्छा से इसीलिये मारा गया था, ताकि उसकी मौत हम सबके लिये जिंदगी पाने का कारण बन जाए। बाइबल कहती है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना 3:16)। और फिर इस प्रकार लिखा है, कि, हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दुख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहने हुए देखते हैं, ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से वह हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु स्वाद

चखे। (इब्रानियों 2:9)।

सो, परमेश्वर का अनुग्रह सारी मानवता पर प्रभु यीशु मसीह के द्वारा ही प्रकट हुआ है। आप चाहे तो इस बात को मानें या न मानें पर यह एक सच्चाई है, कि यीशु मसीह ने परमेश्वर के अनुग्रह से आपके लिये, आपके स्थान पर मृत्यु का स्वाद चख लिया है। इसलिये यदि कोई मसीह में है, बाइबल में लिखा है, तो वह एक नई सृष्टि है। उस पर अब दण्ड की आज्ञा नहीं होगी, क्योंकि वह मृत्यु से पार हो चुका है। (2 कुरिन्थियों 5:17; रोमियों 8:1)। पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है। (रोमियों 6:23)। और यही कारण है, कि मैं बार-बार आपसे निवेदन करता हूं, आपसे आग्रह करके कहता हूं कि आप मसीह को अपना जीवन दे दें; उसे अपने ऊपर धारण कर लें और उस में हो जाएं। क्योंकि बिना उसके मुक्ति नहीं है। हमें जीवन से नहीं, परन्तु पाप से मुक्ति पाने की आवश्यकता है। और जब हम पाप से मुक्ति पा लेते हैं, तो हमें स्वर्ग में अनन्त जीवन पाने की आशा मिल जाती है। और इसीलिये परमेश्वर का वचन, अर्थात उसका पुत्र, स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आया था। क्योंकि वह चाहता है, कि जब हम इस पृथ्वी को छोड़कर जाएं तो उसके द्वारा स्वर्ग में प्रवेश करें।

भिन्न प्रकार की उपासनाएं

जे.सी. चोट

नए नियम को पढ़ने से हम देखते हैं कि उसमें तीन प्रकार की उपासनाओं का उल्लेख हुआ है। इस पाठ में हम उनमें से प्रत्येक के विषय में देखेंगे। ऐसा हम इसलिये करेंगे ताकि हम इस बात को जान लें कि पवित्र शास्त्र में कई प्रकार की उपासनाओं का वर्णन हुआ है। इसी प्रकार इन भिन्न-भिन्न प्रकार की उपासनाओं के विषय में हम विस्तार से अध्ययन करेंगे, इस बात का निश्चय करने के लिये कि आज परमेश्वर हमें कैसी उपासना करने के लिये आज्ञा देता है। और इस सबके द्वारा परिणामस्वरूप हम यह भलीभांति जान लेंगे कि यद्यपि आज जगत में बहुतेरे लोग उपासना तो करते हैं किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि उन सब की उपासना परमेश्वर निश्चय ही स्वीकार करेगा।

1. बाइबल में हमें अज्ञानता की उपासना के विषय में मिलता है

"जब पौलुस अथेने में उनकी बाट जोह रहा था, तो नगर को मूरतों से भरा हुआ देखकर उसका जी जल गया। सो वह आराधनालय में यहूदियों और भक्तों से और चौक में जो लोग मिलते थे, उनसे हर दिन वाद-विवाद किया करता था। तब इपिकूरी और स्तोईकी पंडितों में से कितने उससे तर्क करने लगे, और कितनों ने कहा, यह बकवादी क्या कहना चाहता है? परन्तु औरों ने कहा, वह अन्य देवताओं का प्रचारक मालूम पड़ता है, क्योंकि वह यीशु का, और पुनःरुत्थान का सुसमाचार सुनाता था। तब वे उसे अपने साथ अरयुपगुस पर ले गए और पूछा, क्या हम जान

सकते है, कि यह नया मत जो तू सुनाता है, क्या है? क्योंकि तू अनोखी बातें हमें सुनाता है, इसलिये हम जानना चाहते हैं कि इनका अर्थ क्या है? (इसलिये कि सब अथेनवी और परदेशी जो वहां रहते थे नई-नई बातें सुनने और कहने के सिवाए और किसी काम में समय नहीं बिताते थे)। तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़े होकर कहा; हे अथेने के लोगों में देखता हूं कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानने वाले हो। क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, कि, "अनजाने ईश्वर के लिये। सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है। उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई है; और उन के ठहराए हुए समय और निवास के सिवानों को इसलिये बांधा है, कि वे परमेश्वर को ढूंढ़ें, कदाचित उसे टटोलकर पा जाएं तोभी वह हम में से किसी से दूर नहीं। क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते और स्थिर रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, कि हम तो उसी के वंश भी हैं सो परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं, कि ईश्वरत्व सोने या रूपे या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हो। इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों 17:16-31)।

यहां से हम देखते हैं कि पौलुस अथेने में ऐसे लोगों के बीच में आया था जो मूर्ति-पूजा किया करते थे। उसने उन लोगों की निंदा की और कहा, कि वे अज्ञानता से ऐसा कर रहे हैं। और फिर उसने उन लोगों को सच्चे तथा जीवते परमेश्वर का समाचार दिया।

वे लोग मूर्तियों की उपासना क्यों कर रहे थे? मनुष्य मूर्तियों के सामने क्यों झुकता है? एक मूरत वह वस्तु है जिसे पत्थर या लकड़ी या किसी अन्य वस्तु से ढालकर या तराशकर बनाया गया हो, परन्तु उस में न जीवन है और न आत्मा है। वह देख नहीं सकती, सुन और बोल नहीं सकती है, न सूंघ सकती, चल-फिर नहीं सकती और न सोच सकती है, न किसी को आशीष दे सकती है। चाहे कोई मनुष्य उसे किसी की भी जगह या किसी भी रूप में मानता है, परन्तु वास्तव में वह मूर्ति उस मनुष्य के लिये जो उसे पूजता है स्वयं एक "ईश्वर" बन जाती है।

परन्तु जिन लोगों को स्वर्ग के सच्चे परमेश्वर का ज्ञान नहीं है केवल वहीं किसी मूर्ति या सृष्टि की किसी वस्तु या किसी जीवित या मरे हुए मनुष्य के आगे झुककर उनकी उपासना करते हैं।

उस समय की तरह आज भी लोग मूर्तियों के सामने झुककर उनकी उपासना कर रहे हैं। परन्तु क्यों? उसी कारण से-अज्ञानता, निरी अज्ञानता के फलस्वरूप। कोई

भी समझदार या अकलमंद इंसान किसी भी मूरत या सूरत की उपासना नहीं करेगा, चाहे वह मसीहीयत के बाहर हो या उसके भीतर हो।

2. बाइबल में हमें व्यर्थ-उपासना के विषय में मिलता है-

कुछ लोगों के बारे में प्रभु यीशु ने एक बार यूं कहा था, "और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।" (मत्ती 15:9) एक अन्य स्थान पर यीशु ने कहा था, "जो मुझसे, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन बहुतेरे मुझसे कहेंगें; हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की? और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला? और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए? तब मैं उनसे खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुमको कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करने वालों, मेरे पास से चले जाओ।" (मत्ती 7:21-23)।

आज भी लोगों को यह सिखाया जाता है कि प्रभु की उपासना उसके लोग भिन्न-भिन्न ढंग से कर सकते हैं, और यदि वे सच्चाई तथा निष्कपटता से ऐसा करते हैं तो उनकी उपासना को परमेश्वर स्वीकार करेगा। वह असत्य है। यदि किसी की उपासना मनुष्यों की शिक्षाओं या विधियों तथा मनुष्यों के धर्मोपदेश के अनुसार है तो वह उपासना व्यर्थ है। व्यर्थ का अर्थ है अर्थहीन, बेकार, किसी काम की नहीं। दूसरे शब्दों में, इस प्रकार की उपासना को प्रभु स्वीकार नहीं करता।

यदि कुछ लोग "मसीह के नाम में" इक्ट्ठे होते हैं तो इसका अर्थ यह नहीं हो जाता कि उनकी उपासना को प्रभु स्वीकार करेगा। सर्वप्रथम, यदि वे किसी सांप्रदायिक कलीसिया के सदस्य है, तो वे मसीह के नाम में नहीं परन्तु अपने सम्प्रदाय के नाम में इक्ट्ठे होते है। दूसरे, एक साम्प्रदायिक कलीसिया होने के कारण उनकी उपासना उस संगठन अर्थात सम्प्रदाय की शिक्षानुसार की जाएगी। प्रभु के कथानानुसार, न्याय के दिन उसके सामने बहुत से लोग खड़े होंगे, और वे लोग प्रभु को बताएंगे कि उन्होंने उसके नाम से क्या-क्या काम किए थे, परन्तु उन्होंने क्योंकि उसकी इच्छा को नहीं माना, और वे उस के परिवार (कलीसिया) के नहीं है, इसलिये वह उनका इनकार करेगा और उन्हें स्वीकार नहीं करेगा।

यदि आपकी उपासना मनुष्यों की बनाई शिक्षाओं के अनुसार है, अर्थात, उपासना में आप ऐसे नियमों को मानते या करते हैं जिनके बारे में परमेश्वर का वचन आज्ञा नहीं देता है तो आपकी उपासना व्यर्थ है और प्रभु उसे स्वीकार नहीं करेगा। सो वह समय है कि इस सम्बन्ध में आप अपनी परिस्थिति पर ध्यान दें।

3. बाइबल में हमें सच्ची उपासना के विषय में मिलता है-

उपासना के बारे में मसीह ने कहा था, "परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।" (यूहन्ना 4:24)।

अब यहां कुछ बातों के ऊपर ध्यान दें। सबसे पहले, जैसे कि हमने इससे पूर्व के एक पाठ में पढ़ा था, हमारी उपासना परमेश्वर के प्रति होनी चाहिए। दूसरे, जो उसकी उपासना करते हैं उन्हें चाहिए कि वे उसकी उपासना उसी के इच्छानुसार करें। पररमेश्वर की उपासना करने के लिये किसी पर कोई दबाव नहीं डाला जा सकता,

परन्तु जो उसकी उपासना करना चाहते है उन्हें उसकी उपासना अपनी या अन्य लोगों की इच्छा के अनुसार नहीं लेकिन उसी की इच्छानुसार करनी चाहिए। तीसरे, उपासना आत्मा और सच्चाई से की जानी चाहिए। इसका अर्थ क्या है? इसका अर्थ यह है कि हमारी उपासना आत्मा, अर्थात, निष्कपट मन से, समझदारी और नम्रता के साथ होनी चाहिए। सच्चाई के साथ उपासना के होने का अभिप्राय यह है कि हमारी उपासना इस तरह से होनी चाहिए जैसे कि परमेश्वर के वचन में लिखा हुआ है। अब क्या यह समझने के लिए सरल सी बात नहीं है? परन्तु कुछ लोगों को परमेश्वर के वचानुसार उसकी उपासना बहुत ही साधारण प्रतीत होती है। वे उपासना में हर तरह की रीतियों, विधियों तथा धार्मिक संस्कारों इत्यादि, को अपनाना चाहते है। परन्तु प्रभु ऐसा नहीं चाहता। वह चाहता है कि उसके लोग अपने मनों से उसकी आज्ञा के अनुसार उसकी उपासना करें। वह इस से अधिक या इससे कम कुछ भी स्वीकार नहीं करेगा।

नए नियम में ऐसी ही उपासना के विषय में सिखाया गया है, और आगे अपने अध्ययन में हम देखेंगे कि सबसे पहले मसीही लोग ऐसी ही उपासना करते थे, और आज उसी प्रकार से हमें भी उपासना करनी चाहिए। जब हम सभी ऐसा करेंगे तो हम सबकी उपासना एक समान होगी और प्रभु हमारी उपासना को स्वीकार करेगा।

ऐसी स्त्री जो प्रशंसा के योग्य है

सूज़ी फ्रैड्रिक

अधिकतर स्त्रियों की ऐसी इच्छा होती है कि दूसरे उनकी प्रशंसा करें। यह हमारे मनुष्य स्वभाव का एक भाग है। कुछ स्त्रियां सुन्दर दिखने के लिये महंगे वस्त्र तथा गहने इत्यादि खरीदती है। कई ऐसी भी हैं जो सजने तथा संवरने में कई प्रकार की क्रीम तथा लोशन लगाती हैं। कई अपने बालों को संवारने के लिये कई घंटे लगाती है। कुछ अपने घर को सुन्दर बनाने तथा सजाने में बहुत समय बिताती है। कुछ ऐसी स्त्रियां भी हैं जो बढ़िया से बढ़िया खाना बनाती है, और इन सब बातों से उन स्त्रियों को प्रशंसा मिलती है, परन्तु प्रश्न यह है कि इन सबसे क्या परमेश्वर की ओर से हमें प्रशंसा मिलेगी? बाइबल हमें बताती है कि हमें किस प्रकार से अपने को इस योग्य बनाना है ताकि परमेश्वर की ओर से हमें प्रशंसा मिले। आईये इनमें से कुछ बातों के विषय में देखें:

बाइबल उन स्त्रियों के विषय में भी बताती है जो अपनी बाहरी सुन्दरता पर अधिक ध्यान देती है। प्रेरित पतरस इस प्रकार से लिखते हुए कहता है: "और तुम्हारा सिंगार दिखावटी न हो, अर्थात बाल गूंथने और सोने के गहने, या भांति-भांति के कपड़े पहिनना। वरन तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। (1 पतरस 3:3-5)। परमेश्वर यह चाहता है कि स्त्रियां स्वभाव में

नम्र हो और उसके सम्मुख इसका बहुत बड़ा महत्व है। यह बात सुहावने कपड़ों, गहने तथा अलग-अलग स्टाईल के बालों को बनाने से बहुत अधिक महत्व रखती है। हमारी व्यक्तिगत सुन्दरता देखकर परमेश्वर हमारी बढ़ाई नहीं करेगा बल्कि एक सुन्दर मन रखने से परमेश्वर की प्रशंसा हमें मिलती है। जब परमेश्वर ने इस्त्राएलियों के लिये राजा चुना था, उसने शमुएल भविष्यदूक्ता से यह बात कहीं थी: कि "न तो उसके रूप पर दृष्टि कर और न उसके डील की ऊंचाई पर, क्योंकि मैंने उसे अयोग्य जाना है, क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है, मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है। (1 शमुएल 16:7)।

परमेश्वर सुन्दर घर तथा बढ़िया खाने की प्रशंसा नहीं करता बल्कि जीवन में और भी कई ऐसी महत्त्वपूर्ण बातें हैं जिनसे वह प्रसन्न होता है। जब यीशु इस पृथ्वी पर रहता था, वह एक स्त्री के यहां प्रवचन देने जाता था जिसका नाम था मारथा। मारथा यीशु और मेहमानों की सेवा टहल कर रही थी लेकिन यीशु की बातों को भी ध्यान से सुन रही थी तथा उसकी बातें सुनने से रूक नहीं रही थी। उसकी बहिन मरियम यीशु की बातों को सुन रही थी, परन्तु मारथा कहने लगी कि यीशु को मरियम को बोलना चाहिये कि वह काम में मेरा हाथ बटाये। यीशु ने उससे कहा, "मार्था, हे मार्था, तू बहुत-बहुत बातों के लिये चिन्ता करती है और घबराती है। परन्तु एक बात अवश्य है, और उस उत्तम, भाग को मरियम ने चुन लिया है, जो उससे छीना न जाएगा (लूका 10:41-42)। परमेश्वर चाहता है कि हम आत्मिक बातों को सबसे, अधिक महत्व दें (मत्ती 6:33)।

सुन्दर कपड़े पहिनने में कोई बुराई नहीं है, अपने घर को सुन्दर बनाना और सजाना भी कोई ग़लत बात नहीं है। परमेश्वर चाहता है कि हम अपने घर-परिवार का ध्यान रखें तथा अपने आपको भी अच्छी तरह से संवारे और सुन्दर दिखें। और इन्हीं बातों के विषय में नीतिवचन के 31:10-27 में ज़ोर देकर कहा गया है। परन्तु इन बातों को करने का कारण यह कतई नहीं है कि हमें मनुष्यों की प्रशंसा चाहिये। परन्तु हमारे अच्छे जीवन का कारण यह होना चाहिये ताकि दूसरे लोग हमारे अच्छे जीवन को देखकर परमेश्वर की ओर फिरें तथा हमारे अच्छे धार्मिक जीवनों के द्वारा प्रभु की महिमा हो। यीशु ने मत्ती 5:16 में कहा था, "उसी प्रकार से तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं बढ़ाई करे।" नीतिवचन का लेखक कहता है, "शोभा तो झूठी और सुन्दरता व्यर्थ है, परन्तु जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी।" (नीतिवचन 31:30)। बाइबल हमें शिक्षा देती है कि शारीरिक सुन्दरता से बढ़कर मन की सुन्दरता आवश्यक है। इसलिये नीतिवचन का बुद्धिमान प्रचारक कहता है कि, "सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर, क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है" (नीतिवचन 4:23)। दाऊद की तरह आप भी कह सकती है, हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर" (भजन 51:10)।

घर में कृपा (गलातियों 5:22, 23)

कोय रोपर

मसीह परिवार खुशहाल या सफल घर कैसे हो सकता है? यह सुनिश्चित करके कि उस घर में पवित्र आत्मा का फल मिल रहा है। कैसा फल? गलातियों 5:22, 23 कहता है, पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।

घर जहां आत्मा का वास है वह प्रेम, आनन्द, शांति और धीरज (या सहनशीलता) से परिपूर्ण हैं और ये विशेषताएं भरपूर घर बनाने में सहायक है। इसके अलावा, आत्मा के वास वाला घर मजबूत और स्वस्थ है, क्योंकि इसकी पहचान दया और विनम्रता के रूप में है।

कृपा की खूबी

कृपा (विनम्रता) यूनानी भाषा के शब्द चेरीसटोटीस से लिया गया है। नये नियम में इस शब्द के रूप दस बार मिलते हैं, पर केजेवी में इसका अनुवाद यहां केवल विनम्रता किया गया है। केजेवी में नौ बार इस शब्द का अनुवाद अच्छा (एक बार) भलाई (चार बार) और कृपा (चार बार) हुआ है। अन्य अनुवादों में इसका अधिकतर अनुवाद दया हुआ है। डब्ल्यू ई. वाइन ने कहा है-

चेरीसटोटीस शब्द (क) जो सीधा धर्मी है उसके अर्थ में रोमियों 3:12 (अनुवाद हुआ अच्छा), (ख) मन या काम की करूणा के अर्थ में, परमेश्वर के लिए, रोमियों 2:4; 11:22 (तीन बार); इफिसियों 2:7 (कृपा); तीतुस 3:4 (कृपा); विश्वासियों के लिए कहा गया और कृपा लिखा गया, 2 कुरिन्थियों 6:6; कुलुस्सियों 3:12; गलातियों 5:22 भलाई का संकेत देता है।

गलातियों पर अपने अध्ययन में सी.एफ हॉग और डब्ल्यू ई. वाइन ने चेरीसटोटीस की परिभाषा इस प्रकार दी है-

....भलाई पर केवल गुण के रूप में भलाई नहीं, बल्कि यह काम भलाई अर्थात कामों में अपने आप दिखाई देती भलाई है; फिर भी अपने आपको आपके विरूद्ध रोष व्यक्त करती भलाई नहीं क्योंकि रोमियों 11:22 में इसे कठोरता से अलग किया गया, बल्कि करूणा में भलाई है।

एक व्यक्ति के दूसरे के प्रति काम पर लागू करने पर इस शब्द का बढ़िया अनुवाद कृपा है।

कृपा की आवश्यकता

आत्मा का यह गुण खुशहाल परिवार के लिए आवश्यक है। वास्तव में घर में मधुर सबंधों के लिए कृपा मुख्य बात है। मसीहियत क्या है? पर एक प्रवचन में डेविड रोपर ने कहा, "घर में मसीहियत का अर्थ कृपा है।" बिल्कुल सही था। हमें घर में कृपा की आवश्यकता है।

क्यों? क्योंकि परिवार का हर सदस्य ही एक-दूसरे को उठाने के लिए इतना धीरजवन्त हो सकता है, जिससे घर स्थिर रहे और फिर भी बहुत अप्रिय स्थान हो सकता हैं परिवार का हर व्यक्ति मसीही हो सकता है, जिसका परिणाम यह हो कि घर कुछ हद

तक शांति वाला हो सकता है। पर खुशहाल परिवार में ऐसा नहीं होता। घर स्थाई होने के बावजूद स्थाई तौर पर कठोर और चेतावनी देने वाला हो सकता है। यह वह स्थान हो सकता है जहां कोई मुस्कुराता नहीं, जहां कोई अन्दर से खुश नहीं है, बल्कि उस घर को इक्ट्ठा रखने के लिए केवल रूखा इरादा है। किसी दम्पत्ति का व्यवहार ऐसा हो सकता है, जिसे इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है, मैं इस विवाह (या परिवार) से जुड़ा रहूंगा क्योंकि मैं बेबस हूं, पर मुझे यह पसंद नहीं है।

एक घर में ऐसी स्थिति हो सकती है जहां पति या पत्नी सुबह बिस्तर से उठते हुए दांत कटकटाते हुए कहता या कहती है, "अरे नहीं, विवाह का एक और पल नहीं, मुझे नफरत है, मैं मजबूर हूं। मुझे रहना ही पड़ेगा, पर मुझे कोई खुशी नहीं है। फिर दोनों दिन-भर त्यौरियां चढ़ाकर एक-दूसरे को घूरते रहते हैं। फिर कइयों के लिए विवाह के एक और दिन का सामना करना काम के लिए सुबह बहुत जल्दी उठ जाने या डॉक्टर के पास जाने जैसा यानी कुछ ऐसा हो सकता है जो किया तो जाना है पर गलत है, जिसमें आनन्द की कोई उम्मीद नहीं है।

अपने घर को इरादे के अलावा कुछ और न करके अपने परिवार को इक्ट्ठा रखने के लिए लड़ाई का अखाड़ा बनने से कैसे रोका जा सकता है? गुणात्मक मानवीय संबंध ऐसी परिस्थिति को रोककर घर को खुशहाल जगह बना देंगे। ऐसे संबंध कैसे बनते हैं? पति या पत्नी, माता-पिता या बच्चों के साथ अच्छा संबंध रखने के लिए क्या आवश्यक है? अधिक प्रौढ़ होने के बावजूद विवाह का संबंध वास्तव में किसी भी अन्य मानवीय से अलग नहीं है। जो गुण हमें मित्र बनाने और विवाह के बाहर व्यक्तिगत संबंध बनाए रखने के योग्य बनाते हैं वहीं घर में अच्छे संबंध को बढ़ावा देंगे।

वे कौन सी खूबियां हैं जिन से कहीं पर भी अच्छे मानवीय संबंध बनते हैं? उन में से एक खूबी कृपा है। कृपा को एक गौण गुण कहा जाता है पर मसीही लोगों को इसे मुख्य गुण के रूप में देखना आवश्यक है, विशेषकर घर में। इफिसियों 4:32 कहता है, "एक दूसरे पर कृपाल, और करूणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी दूसरे के अपराध क्षमा करो।"

कृपा की प्रासंगिकता

विशेषकर हमें घर में तीन प्रकार से कृपालु होने की आवश्यकता है।

न्याय में कृपालु

घर में हमें न्याय में कृपालु होना चाहिए। हमें दूसरों के बारे में दया से विचार करना सीखना आवश्यक है। हम दूसरों पर दोष लगाने से इंकार करके न्याय में कृपालु हो सकते है। यीशु ने कहा, दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए। (मत्ती 7:1)। निश्चित रूप में वह यह नहीं कह रहा था कि हमें दूसरों के कामों का कभी मूल्यांकन नहीं करना चाहिए। तो फिर वह क्या कह रहा है? (क) हम दूसरों की कमियों के कारण डांटने फटकारने के समय अपनी कमियों को अनदेखा नहीं करते (मत्ती 7:3-5)। (ख) दूसरों पर दोष लगाने के लिए हमें उससे अलग मापदण्ड नहीं बरतना चाहिए जो हम अपने उपर लगाते है। (ग) हमें दूसरों की मंशा पर दोष नहीं लगाना चाहिए। (घ) हमें दूसरों के अपने अवलोकन में आवश्यकता से अधिक आलोचनात्मक या बहुत कठोर नहीं होना चाहिए।

घर में हम न्याय करने में कैसे कृपालु हो सकते है? तीन सुझाव विशेष रूप से

महत्वपूर्ण लगते हैं।

1. हमें अत्यधिक आलोचक यानी अति कठोर नहीं होना चाहिए। पौलुस के मन में शायद ऐसी ही ताड़ना थी जब उसने लिखा, "अपने बच्चों को रिस न दिलाओ" (इफिसियों 6:4; देखें कुलुस्सियों 3:19)। दोनों के संबंधों में यह, विशेषकर उनके लिए जो अगुवे हैं, यह बहुत ही आवश्यक है कि दूसरों को आवश्यकता से अधिक आलोचना नहीं करनी चाहिए।

2. इसके विपरीत हमें परिवार के लोगों की बेहतरी के लिए सोचना चाहिए। हमें दूसरों की कमियों या कमजोरियों पर नहीं, बल्कि उनकी सामर्थ पर ध्यान देना चाहिए। हमें उन्हें अच्छे लोग मानना आवश्यक है। यदि हम उनसे बेहतर की उम्मीद करते हैं, तो वे हमारी उम्मीदों पर खरा उतरे। अपने आप पूरी होनी वाली भविष्यवाणी जैसी एक बात है। एक आदमी को अपने बेटे के बारे में कुछ कहने की बुरी आदत, यह जॉय है, शहर का सबसे गंदा लड़का। मेरे डैडी जान-बूझकर यह कहते, यह जॉय है, शहर का सबसे अच्छा लड़का। हमें यह सुझाव नहीं देना चाहिए कि हमारे बच्चे बुरे हैं। बच्चे को डांटने का बढ़िया ढंग यह कहना है, तेरे इस काम से मुझे निराशा हुई।

3. हम दूसरों की मंशा पर दोष नहीं लगा सकते। अपने बच्चों के साथ व्यवहार करते हुए हमें लग सकता है कि हमें पता है कि जो कुछ उन्होंने किया वह क्यों किया (और कईबार हम सही हो सकते हैं), पर हमें पक्का पता कभी नहीं चला। हमें उनकी मंशाओं के साथ नहीं, बल्कि उनके व्यवहार के साथ पेश आना चाहिए। जब हम अपनी पत्नी या पति से किसी ऐसी बात पर बात कर रहे हैं जो हमें स्वीकार नहीं, या हम किसी बात पर असहमत हैं, तो हमें जल्दबाजी में निर्णय लेने से बचना होगा। हमें यह कभी नहीं मानना चाहिए कि, उसने मुझे परेशान करने के लिए किया, या उसने मुझे चिड़ाने के लिए किया है। हमें मंशा पर नहीं, बल्कि व्यवहार पर ध्यान लगाना चाहिए।

प्रभु भोज

जॉन स्टेसी

पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 11:20 में यूं कहा था, "सो तुम जो एक जगह में इकट्ठे होते हो, तो यह प्रभु भोज खाने के लिये नहीं।" प्रभु भोज की स्थापना प्रभु यीशु ने उस रात को की थी जिसमें उसे उसके एक चेले यहूदा ने पकड़वाया था। (1 कुरिन्थियों 11:23)। प्रभु भोज के बारे में लोगों के मनों में अनेकों भ्रांतियां रही हैं, और कई प्रश्न इस संबंध में अकसर पूछे जाते हैं। इस समय हम ऐसे ही कुछ प्रश्नों के ऊपर विचार करेंगे। जिन्हें प्रभु भोज के संबंध में अकसर पूछा जाता है।

सबसे पहले, हम यह देखें, कि प्रभु भोज है क्या? प्रभु-भोज एक यादगार है। लूका 22:29 में यीशु ने प्रभु भोज के बारे में कहा था कि, मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। जिस प्रकार पन्द्रह अगस्त का दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में माना जाता है और जिस प्रकार कब्रिस्तानों में अनेक कब्रों पर पत्थर लगे होते हैं जिन पर लिखे हुए अक्षरों को पढ़कर हमे उनकी याद आती है जो कभी हमारी ही तरह जीवित थे। ऐसे ही प्रभु भोज में भाग लेकर हम मसीह को याद करते हैं। जब लोग प्रभु भोज

में भाग लेते हैं तो उन्हें वे बातें याद आती है जो उस रात को गतसमनी में घटी थी, उन्हें वह भीड़ याद आती है जो यीशु की मौत मांग रही थी। उन्हें याद आता है कि किस प्रकार यीशु उस रात को हन्ना और हेरोदेस तथा पीलातुस के सामने लाया गया था। वे कीलें जिन्हें उसके हाथों और पैरों में ठोका गया था और वह भाला जो उसकी पसली में भेदा गया था जिससे पानी और लोहु निकलकर बहने लगे थे, उस समय हमें याद आ जाते हैं। प्रभु भोज लेते समय हमें यीशु की सारी तकलीफें और यात्नाएं स्मरण हो आती हैं।

फिर प्रभु भोज लेकर हम बार-बार प्रभु यीशु की मौत का प्रचार करते हैं। 1 कुरिन्थियों 11:26 में लिखा है कि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को, जब तक वह न आए प्रचार करते हो। सब लोग प्रचारक बनकर प्रचार नहीं कर सकते, परन्तु जितनी बार हम सब प्रभु भोज में भाग लेते हैं तो ऐसा करके हम बार-बार यह व्यक्त करते हैं कि हम यह विश्वास करते हैं कि यीशु हमारे लिये मारा गया था और गाड़ा गया था और जी उठा था और एक दिन वह फिर वापस आएगा।

और फिर, इस संबंध में हम यह देखते हैं, कि प्रभु भोज से हमें आत्मिक शक्ति मिलती है। हम पढ़ते हैं, यूहन्ना 6:53-55 में कि यीशु ने एक भीड़ को सम्बोधित करके कहा था कि, मैं तुम से सच-सच कहता हूं, जब तक मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लोहु न पीओ, तुम में जीवन नहीं। जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहु पीता है, अनन्त जीवन उसी का है, और मैं अंतिम दिन फिर उसे जिला उठाऊंगा। क्योंकि मेरा मांस वास्तव में खाने की वस्तु है और मेरा लोहु वास्तव में पीने की वस्तु है। शारीरिक तथा आत्मिक जीवन परमेश्वर का एक विशेष दान है। शारीरिक रूप से जीवित रहने के लिये हमें हवा, भोजन, पानी और प्रकाश की आवश्यकता पड़ती है। यदि किसी मनुष्य को ये वस्तुएं न मिल पाएं तो वह जीवित नहीं रह सकता ऐसे ही आत्मिक प्राणी होने के कारण जो परमेश्वर का स्वरूप है, हमें उसके पुत्र का मांस खाने की और उसका लोहू पीने की आवश्यकता है, और अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो हमारी आत्माएं सदा के लिये परमेश्वर से दूर हो जाएंगी।

अधिकार से जोड़ें (रोमियों 13:6, 7)

डेविड रोपर

1 से 4 आयतों में पौलुस ने मानवीय सरकार के साथ मसीही व्यक्ति के संबंध के बारे में सामान्य नियम तय किए; हमें देश के कानून का पालन करना चाहिए; हमें अच्छे नागरिक बनना चाहिए। 6 और 7 आयतों में प्रेरित ने अच्छे नागरिक में पाई जाने वाली खूबियों के बारे में निर्देश दिए हैं।

अपना कर चुकाएं

आयत 6 कहती है, इसलिए (क्योंकि मानवीय सरकार परमेश्वर द्वारा ठहराई गयी थी) क्योंकि वे परमेश्वर के सेवक है, और सदा इसी काम में लगे रहते हैं।

सेवक आयत 4 में अनुवाद हुए सेवक से अलग यूनानी शब्द से लिया गया है। याजकों की सेवा देने वालों के लिए सुरक्षित शब्द से लिया गया है। इस तथ्य को रेखांकित करता है कि सांसारिक हाकिम जो अनजाने में सेवकों के रूप में काम करते हैं, ऐसे कामों को करते हैं जो परमेश्वर के आदेश से है।

और सदा इसी काम में लगे रहते हैं जिससे पता चलता है कि पौलुस ने क्या कहा (या उसका क्या अर्थ था) कि मानवीय सरकारों का क्या काम है, अपने नागरिकों की रक्षा करना और अपने नागरिकों को विशेष सेवाएं प्रदान करना जो वे अपने आप नहीं पा सकते। क्योंकि मानवीय सरकार परमेश्वर द्वारा स्थापित की गई होती है, क्योंकि सरकारी कर्मचारी (एक अर्थ में) परमेश्वर के उद्देश्य को ही पूरा कर रहे हैं, इसलिए हमें कर देने चाहिए। जॉन आर. डब्ल्यू स्टॉट ने लिखा है कि लोग इस बात पर असहमत हैं कि हमें कैसी सरकार चाहिए (जो कर देने की राशि को तय करता है), परन्तु इस महत्व पर सब सहमत है कि ऐसी कुछ सेवाएं हैं, जो राज्य को दी जानी आवश्यक है, और इसलिए कर देना आवश्यक है।

कर देने की शिक्षा इस चर्चा के बाद में बना विचार नहीं है। पिछली आयतों में पौलुस ने इस निष्कर्ष को आधार बना दिया था। जैसा कि पाठ के परिचय में ध्यान दिया गया था। यहूदी लोग रोम को कर देना पसंद नहीं करते थे। पौलुस ने इस पर जोर दिया कि कर दिया जाना चाहिए। यदि हम कर नहीं देते हैं तो हम सरकार को ही धोखा नहीं देते बल्कि अपना योगदान देने के लिए मुकरते भी हैं, बल्कि परमेश्वर की आज्ञा भी तोड़ रहे हैं।

एक और विरोध आमतौर पर पाया जाता है, पर यदि मैं कर देता हूं तो मैं उन सभी गलत कामों भागीदार होता हूं जो सरकार करती है। मैं आपको याद दिला दूं कि यीशु ने कहा था कि जो कैसर का है वह कैसर को दो और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो (लूका 20:25)। इसके अलावा याद रखें कि पौलुस मूर्तिपूजक रोमी साम्राज्य को कर देने की बात कर रहा था। जो राजनैतिक भ्रष्टता और ऐसे अधिकारियों से भरी सरकार थी जो पैसे का दुरुपयोग करते थे। तौभी यीशु और पौलुस दोनों ने कहा कि कर दिए जाने चाहिए। हमारी जिम्मेदारी अपने कर देना है; उस धन का इस्तेमाल समझदारी से करना अधिकारियों का काम हैं यदि वे अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाते तो यह हमारे लिये कर न देने का बहाना नहीं है।

आयत 7 में पौलुस ने अपने विचार को फिर से जोड़ दिया। आयत का आरंभ इसलिए हर एक का हक्क चुकाया करो। संदर्भ में हर एक का अर्थ छोटे से छोटे से लेकर बड़े से बड़े यानी कम से कम महत्वपूर्ण से लेकर सबसे महत्व वाले अधिकारी चुकाया शब्द उसी मूल यूनानी शब्द से लिया गया है, जिसका इस्तेमाल यीशु ने जो कैसर का है वह कैसर को दो कहते हुए किया।

हर एक का हक चुकाया करो; जिसे कर चाहिए, उसे कर दो; जिसे महसूल चाहिए, उसे महसूल दो (आयत 7क, ख)। कर आयत 6 में पाए जाने वाले और लूका 20:22 यीशु से किए गए प्रश्न में इस्तेमाल होने वाले पोरोस से लिया गया है। अधीन देश द्वारा जजिया देना है। महसूल जिसका अर्थ है के गौण महत्व में, सार्वजनिक लक्ष्यों, टोल, टेक्स आबकारी के लिए दिया जाने वाला। दोनों यूनानी शब्दों

में अन्तर करना कठिन है। पौलुस ने संभवतया गुप्त करों के साथ-साथ सरकारी करों को भी लेते हुए हर कर को समेटने के लिए इनका इस्तेमाल किया होगा। संदेश स्पष्ट है कि मसीही लोगों को कर अदा करना चाहिए।

सरकारी अधिकारियों के प्रति सम्मान दिखाएं

फिर पौलुस ने एक शर्त जोड़ी जो कइयों के लिए कर देने से भी बड़ी चुनौती है, जिससे डरना चाहिए, उससे डरो; जिसका आदर करना चाहिए उसका आदर करो (आयत 7ग)। डरना जिसके अर्थ की कई परछाइयां हैं। यह वह शब्द है जिसका इस्तेमाल 3 और 4 आयतों में दण्ड के भय की बात करने के लिए किया गया, पर आयत 7 में इसमें अलग जोड़ दिया गया। आदर यहां इस विचार को बेहतर ढंग से व्यक्त करता है। सम्मान समय से लिया गया है, जिसका अर्थ किसी कीमती चीज पर विचार करना है। याद रखें कि इस संदर्भ में पौलुस सरकारी अधिकारियों की बात कर रहा था।

एक अंतिम आपत्ति दर्ज कराई जा सकती है, पर मैं किसी विशेष सरकारी अधिकारी के प्रति सम्मान नहीं दिखा सकता, इसलिए मैं उसका आदर करने से इंकार करता हूं। वह बेईमान है और घटिया आदमी है। फिर मैं आपको याद दिलाता हूं कि पौलुस रोमी सरकार के अधिकारियों की बात कर रहा था जिसमें से अधिकतर बेहद भ्रष्ट और घटिया थे। जब पतरस ने कहा, राजा का सम्मान समय से करो (1 पतरस 2:17), तो इसका इशारा परमेश्वर को न मानने वाले रोमी सम्राट नीरो की ओर था। कह सकते हैं कि यदि आप व्यक्ति का सम्मान नहीं करते तो आप उस पद का तो सम्मान कर ही सकते है। अमेरिका के कई ऐसे राष्ट्रपति रहे है, जिन्हें मैं निजी तौर पर सम्मान नहीं देता, पर यदि उनके इस कमरे में आने पर मैं मौजूद होता तो मैं उनके पद के सम्मान के कारण उठकर खड़ा हो जाता।

आयत 7 को छोड़ने से पहले, मैं यह ध्यान दिलाना चाहता हूं कि यह प्रासंगिकता अन्य आधिकारियों पदों के लिए माता-पिता, स्कूल के अधिकारी, काम देने वाले, ऐल्डर और पतियों के लिए इस्तेमाल की जा सकती है। हर समाज में ऐसे लोग होते हैं जो अधिकार का सम्मान नहीं करते या बहुत कम करते हैं। ऐसे लोगों को पौलुस कहता, उन्हें उनका पूरा हक चुकाओ जिनका आदर करना चाहिए। (उन्हें आदर दो); जिन्हें सम्मान (देना चाहिए) उन्हें सम्मान दो।

राज्य की आरंभिक बढ़ौत

जिम ई. वॉलड्रन

जैसे कि हमने देखा है, अपने पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बीच पृथ्वी पर चालीस दिन प्रभु यीशु ने प्रेरितों के साथ व्यतीत किए थे, जैसा कि हम पढ़ते हैं:

> "उसने दुख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आपको उन्हें (प्रेरितों को) जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा, और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा।" (प्रेरितों 1:1-3)।

उन्हीं चालीस दिनों के भीतर जब यीशु मसीह अपने प्रेरितों को अपने राज्य के बारे में बता रहे थे, तो उन्होंने अपना महान् आदेश भी प्रेरितों को दिया था जिसके बारे में दो जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं, मत्ती के अनुसार:

> "यीशु ने उनके पास आकर कहा, स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अंत तक सदा तुम्हारे संग हूं।" (मत्ती 28:18-20)।

मरकुस ने अपनी पुस्तक में इसी विशाल आदेश के बारे में लिखकर कहा था, कि यीशु ने अपने प्रेरितों को अपनी अंतिम आज्ञा देकर उनसे इस प्रकार कहा था:

> "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:15-16)।

सुसमाचार को सारे जगत में प्रचार करने की इस बात से हमें भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा लिखी (ई.पू. 750) वह बात याद आती है, कि "अंत के दिनों में" परमेश्वर का भवन दृढ़ होगा और "हर जाति के लोग" उसमें आएंगे, जैसे कि लिखा है:

> "अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा, और हर जाति के लोग धारा के समान उसकी ओर चलेंगे।" (यशायाह 2:2)।

पौलुस ने तीमुथियुस को लिखकर अपनी पहली पत्री में, (ई. सन 65), "परमेश्वर के घर" के बारे में उससे इस प्रकार कहा था:

> "मैं तेरे पास जल्द आने की आशा रखने पर भी ये बातें तुझे इसलिये लिखता हूं, कि यदि मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले कि परमेश्वर के घराने में, जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है और जो सत्य का खंभा और नींव है, कैसा बर्ताव करना चाहिए।" (1 तीमुथियुस 3:14-15)।

पौलुस द्वारा तीमुथियुस को लिखी इस बात से हम यह सीखते हैं कि कलीसिया (सभा) संसार में से बुलाए हुए लोगों की एक मंडली है और वही परमेश्वर का भवन अथवा घर है, जिसके बारे में यशायाह ने उसकी स्थापना होने के लगभग सात सौ पचास वर्ष पूर्व कहा था। उसी कलीसिया को सम्बोधित करके उसे **"सत्य का खंभा और नींव"** कहा गया है। इसका अर्थ यह है कि जिस कलीसिया को मसीह ने पिन्तेकुस्त के दिन बनाया था उसका कर्त्तव्य है कि वह यीशु और उसके प्रेरितों की शिक्षाओं की, जो उसके नए नियम में मिलती हैं, रक्षा और रखवाली करे, अर्थात् इस बात को ध्यान में रखें कि बाइबल में लिखी बातों में न तो कुछ जोड़ा जाए, न घटाया और न बढ़ाया जाए।

अब हम यह देखना चाहेंगे कि मसीहीयत के आरंभ में यीशु के प्रेरितों ने और उसके अनुयायीयों ने उसके आदेश का पालन किस प्रकार किया था। यीशु के आदेशानुसार उसके सुसमाचार को उन्हें सारे संसार में सब लोगों तक पहुंचाना था। इस बात को ध्यान में रखकर, हम बाइबल में पढ़ते हैं, कि जब परमेश्वर के भवन अर्थात् यीशु मसीह के राज्य की स्थापना हो गई थी, तो सबसे पहले यरुशलेम में ही कलीसिया बहुत तेज़ी से बढ़ने लगी थी। लेकिन उस नगर में रहने वाले यहूदियों के अगुवे और लीडर इस बात से बड़े ही परेशान और व्याकुल होने लगे थे क्योंकि एक बहुत बड़ी संख्या में अनेकों यहूदी अपने मत को छोड़कर मसीह यीशु के अनुयायी बनने लगे थे, और इसका नतीजा यह हुआ था कि मसीही लोगों पर और कलीसिया पर अत्याचार होने लगे थे, और भारी उपद्रव के कारण, "प्रेरितों को छोड़

सबके सब यहूदिया और सामरिया देशों में तित्तर-बित्तर हो गए थे।" (प्रेरितों 8:1)।

जो लोग उपद्रव के कारण इधर-उधर चले गए थे उनमें एक अनुयायी फिलिप्पुस नाम का था, जिसे आगे चलकर एक सुसमाचार प्रचारक के नाम से जाना गया था। (प्रेरितों 21:8)। यह मसीही भाई यरूशलेम से लगभग तीस मील दूर सामरिया नाम के स्थान में आया था, जहाँ उसने बहुत से लोगों को यीशु के नाम से चंगाई दी थी, (प्रेरितों 8:4-8) क्योंकि प्रेरितों ने उसके ऊपर हाथ रखकर उसे चंगाई प्रदान करने का वरदान दिया था (प्रेरितों 6:1-7; 8:4-8, 18) इस विषय में हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

> "परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस का विश्वास किया जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।" (प्रेरितों 8:12)।

यहाँ इस बात पर ध्यान दें कि वह उस राज्य का प्रचार कर रहा था जो कुछ ही समय पूर्व पिन्तेकुस्त के दिन स्थापित हुआ था, न कि किसी ऐसे राज्य का जिसे यीशु भविष्य में आकर यरूशलेम में स्थापित करेंगे और उसमें एक हज़ार वर्ष तक पृथ्वी पर राज्य करेंगे। परमेश्वर का वचन इस प्रकार कहता है:

> "और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे, परन्तु हर एक अपनी-अपनी बारी से: पहला फल मसीह, फिर मसीह के आने पर उसके लोग इसके बाद अन्त होगा। उस समय वह सारी प्रधानता और सारा अधिकार, और सामर्थ्य का अंत करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। क्योंकि जब तक वह अपने बैरियों को अपने पाँवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है। सबसे अंतिम बैरी जो नष्ट किया जाएगा, वह मृत्यु है।" (1 कुरिन्थियों 15:22-26)।

यीशु के दोबारा आने पर उसके किसी ऐसे **राज्य का आरंभ** इस पृथ्वी पर नहीं होगा जिसमें वह पृथ्वी पर एक हज़ार साल तक राज्य करेगा, क्योंकि बाइबल में लिखा है, **"इसके बाद अन्त होगा।"** यीशु जब आएंगे तो वे राज्य को आरंभ करने के लिये नहीं आएंगे, पर जैसे कि लिखा है कि उस समय, **"वह राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा।"** यह राज्य वही राज्य होगा जिसमें शासन करने के लिये आज से 2000 वर्ष पूर्व वह **यहूदा के गोत्र के सिंह** के रूप में राजगद्दी पर बैठा था, और यह अधिकार उसे उस समय सौंपा गया था जब वह स्वर्ग पर वापस उठा लिया गया था (दानिय्येल 7:13-14)।

जैसे कि फिलिप्पुस ने परमेश्वर के राज्य का प्रचार किया था उसी प्रकार से हम पौलुस के बारे में भी पढ़ते हैं। लूका, जिसने प्रेरितों के कामों की पुस्तक को लिखा है, हमें बताता है कि जब पौलुस इफिसुस में गया था तो वहाँ उसने यहूदियों के मन्दिर में जाकर प्रचार किया था, लिखा है:

> "वह आराधनालय में जाकर तीन महीने तक निडर होकर बोलता रहा, और परमेश्वर के राज्य के विषय में विवाद करता और समझाता रहा।" (प्रेरितों 19:8)।

इफिसुस के बाद पौलुस, "परमेश्वर और मसीह के राज्य" का प्रचार करता हुआ मकिदुनिया और यूनान में आया था (प्रेरितों 20:1-3)। उसके बाद उसने फिर से यरूशलेम को जाने का निश्चय किया था। और वहाँ जाते हुए वह बीच में एक सप्ताह के लिये त्रोआस नामक स्थान में रूका था (प्रेरितों 20:6-7)। और वहाँ से वह और उसके साथ जो लोग थे मिलेतुस में पहुंचे थे, जो तुर्की के पश्चिमी तट पर स्थित था। उसी जगह पर पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों को मिलने के लिये अपने पास बुलाया था, और जब वे आ गए थे तो उसने उन्हें वे बातें याद दिलाई थीं जो उसने वहाँ उनके साथ तीन बरस

तक रहते हुए उन्हें सिखाई थीं; और उनसे यूं कहा था:

> "अब देखो, मैं जानता हूं कि तुम सब जिनमें मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मुंह फिर न देखोगे।" (प्रेरितों 20:25)।

फिर मिलेतुस को छोड़कर पौलुस और उसके साथी यरूशलेम के लिये निकल गए थे। लेकिन वहाँ पहुंचने पर, कुछ यहूदियों के विरोध करने के कारण, पौलुस को पकड़कर जेल में डाल दिया गया था। पर यह जानने के बाद कि पौलुस वास्तव में एक रोमी है, अर्थात् रोम का एक नागरिक है, उन्होंने उसे कैसर के पास भेज दिया था। (प्रेरितों 22:26)।

रोम में पौलुस जब कैसर के सामने अपनी सुनवाई की प्रतिक्षा कर रहा था, तो उसे एक किराए के घर में रहने की अनुमति मिल गई थी। जहाँ वह एक सिपाही की निगरानी में अकेला रहता था। वहाँ रहते हुए वह लोगों से मिलता था और उन्हें सुसमाचार सुनाता था। वहीं पर उसने यहूदियों के धार्मिक अगुवों को बुलाकर उनके साथ वार्तालाप करने की योजना बनाई थी। इस सम्बंध में हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

> "तब उन्होंने उसके लिये एक दिन ठहराया और बहुत से लोग उसके यहाँ इक्ट्ठे हुए और वह परमेश्वर के राज्य की गवाही देता हुआ, और मूसा की व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों से यीशु के विषय में समझा-समझाकर भोर से सांझ तक वर्णन करता रहा।" (प्रेरितों 28:23)।

प्रेरितों के कामों की पुस्तक के अंत में पौलूस के बारे में हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

> "वह पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा, और जो उसके पास आते थे, उन सबसे मिलता रहा और बिना रोक-टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा।" (प्रेरितों 28:30-31)।

सो इन बातों से हमें यह सीखने को मिलता है कि प्रेरितों के कामों की पुस्तक में हम जितने भी सुसमाचार प्रचारकों के बारे में पढ़ते हैं वे सब के सब उस राज्य के बारे में लोगों को बताते थे जिसका आरंभ पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था। इसके अतिरिक्त, पौलुस ने, जो स्वयं यहूदी मत से निकलकर आया था, कुलुस्से में कलीसिया को, जो अन्य जातियों में से निकलकर आए थे, ई. सन् 62 में लिखकर इस प्रकार कहा था:

> "और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिसने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में सहभागी हों। उसी ने हमें अंधकार के वश से छुड़ाकर **अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया**।" (कुलुस्सियों 1:12-13)।

यहाँ ध्यान दें इस बात पर, कि वे सभी मसीही भाई-बहन जो अन्य जातियों में से निकलकर आए थे, उस समय, पहली शताब्दी में, परमेश्वर के राज्य में थे। इसलिये ऐसा विश्वास करना या सिखाना कि यीशु मसीह पृथ्वी पर आकर "एक हज़ार वर्ष तक राज्य" करेंगे एक बहुत बड़ी झूठी शिक्षा है। क्योंकि इस शिक्षा के अनुसार, यीशु का राज्य इस पृथ्वी पर होगा और इस जगत का होगा, जहाँ वह इस्राएल देश से अपने राज्य का संचालन करेगा। लेकिन यीशु ने स्वयं रोम के एक बड़े अधिकारी पिलातुस के सामने इस प्रकार कहा था:

> "मेरा राज्य इस संसार का नहीं; यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक लड़ते कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता, परन्तु मेरा राज्य यहाँ का नहीं।" (यूहन्ना 18:36)।

वे लोग जो यह सिखाते हैं कि यीशु इस पृथ्वी पर आकर अपना राज्य स्थापित करेंगे और ज़मीन पर रहकर एक हज़ार साल तक राज्य करेंगे, उनका मत यह है कि, यीशु जब इस पृथ्वी पर थे उस समय वे इस पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करना चाहते थे, क्योंकि यीशु ने कहा था, (1) राज्य निकट आया है (मत्ती 4:17), (2) अपने प्रेरितों से यीशु ने

कहा था कि उनके ही जीवनकाल में उसका राज्य स्थापित हो जाएगा (मरकुस 9:1; लूका 9:27), और (3) पतरस को स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दी जाएंगी (मत्ती 18:16-19); लेकिन फिर वे कहते हैं, कि उस समय यीशु अपना राज्य स्थापित नहीं कर सके थे, क्योंकि यहूदियों ने उन्हें अपना राजा मानने से इंकार कर दिया था, इसलिये यीशु ने उस समय पृथ्वी पर अपना राज्य बनाने का निश्चय टाल दिया था और भविष्य में दोबारा पृथ्वी पर आकर अपना राज्य स्थापित करने का निश्चय किया था।

वास्तव में इस प्रकार की सोच बड़ी ही मूर्खतापूर्ण है। क्योंकि यदि यहूदियों ने पहली बार यीशु का इंकार करके परमेश्वर की योजना और मनसा को टाल दिया था, तो क्या वे इस्राएली ऐसा ही दोबारा करके फिर से परमेश्वर की इच्छा को नहीं टाल सकते? वे तो आज भी यानि 2000 वर्ष बाद भी मसीह को नहीं मानते और उसमें विश्वास नहीं करते।

इसी सम्बंध में एक बात हम और देखते हैं, अर्थात् यह, कि हकीकत तो यह है कि यहूदी तो वास्तव में उसे अपना राजा स्वयं ही बनाना चाहते थे, ताकि वह उनकी रक्षा करे और उनके लिये लड़े; जैसे कि हम उस घटना में देखते हैं जहाँ यीशु ने दो छोटी मछलियों और पाँच रोटियों से एक बहुत बड़ी भीड़ को भोजन खिलाकर तृप्त किया था, वहाँ लिखा है कि "खाने वाले स्त्रियों और बालकों को छोड़कर, पाँच हज़ार पुरुषों के लगभग थे।" (मत्ती 14:21)। इसी घटना का वर्णन एक अन्य स्थान पर हमें इस प्रकार मिलता है:

> "तब यीशु ने रोटियाँ लीं, और धन्यवाद करके बैठनेवालों को बाँट दी; और वैसे ही मछलियों में से जितनी वे चाहते थे बाँट दिया" तब जो आश्चर्य कर्म उसने कर दिखाया उसे वे लोग देखकर कहने लगे, "वह भविष्यवक्ता जो जगत में आनेवाला था निश्चय यही है" **यीशु यह जानकर कि वे मुझे राजा बनाने के लिये पकड़ना चाहते हैं, फिर पहाड़ पर अकेला चला गया।**" (यूहन्ना 6:11, 14-15)।

यह मानना और सिखाना कि यीशु और परमेश्वर के राज्य (इफिसियों 5:5) की स्थापना भविष्य में किसी समय पृथ्वी पर होनेवाली है, एक ऐसी गलत और भरमाने वाली शिक्षा है जिससे लाखों लोग प्रभावित होकर धोखे में रह रहे हैं।

अब शायद कोई यह कहे, कि यदि राज्य की स्थापना पिन्तेकुस्त के दिन हो गई थी तो फिर यीशु ने न्याय के दिन को चित्रित करके ऐसे क्यों कहा था:

> "तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है।" (मत्ती 25:34)।

वास्तव में यह बात यीशु ने यह दिखाने के लिये कही थी कि जो लोग अब इस समय उसके राज्य में हैं वे न्याय के दिन के बाद उसके राज्य के अधिकारी बन जाएंगे। यीशु ने नीकुदेमुस नामक यहूदियों के एक गुरु से यूं कहा था:

> "मैं तुझ से सच-सच कहता हूं, यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। नीकुदेमुस ने उससे कहा, "मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?" यीशु ने उत्तर दिया, मैं तुझ से सच-सच कहता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" (यूहन्ना 3:3-5)।

दूसरे शब्दों में, इसे इस प्रकार कहा जा सकता है, कि प्रत्येक मनुष्य को इस जीवन में सुसमाचार का पालन करके परमेश्वर के परिवार में नया जन्म लेने की आवश्यकता है (मरकुस 16:15-16; प्रेरितों 2:38; प्रेरितों 22:16), अर्थात् "जल और आत्मा से", ताकि न्याय के दिन वह पिता परमेश्वर के राज्य का वारिस बन सके। देखिए: 2 तीमुथियुस 4:18.

प्रभु यीशु मसीह को बाइबल में राजाओं का राजा कहकर इसलिये सम्बोधित किया गया है, क्योंकि वह वास्तव में राजा है। जैसे कि प्रेरित यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में लिखकर (ई. सन् 91 में) उस समय यीशु के विषय में कहा था:

> "और यीशु मसीह की ओर से जो विश्वास योग्य साक्षी और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा और **पृथ्वी के राजाओं का हाकिम है।**" (प्रकाशितवाक्य 1:5)।

यूहन्ना ने स्वयं अपने बारे में भी प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के उसी अध्याय में लिखकर यूं कहा था कि वह स्वयं भी मसीह के राज्य में उस समय था, उसने कहा था:

> "मैं यूहन्ना, जो तुम्हारा भाई और यीशु के क्लेश और **राज्य और धीरज में** तुम्हारा सहभागी हूं, परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही के कारण पतमुस नामक टापू में था।" (प्रकाशितवाक्य 1:9)।

इस पुस्तक में अध्ययन के द्वारा हमने विशेष रूप से जो बातें देखी हैं वे इस प्रकार है: (1) यीशु मसीह का राज्याभिषेक (दानिय्येल 7:13, 14) जो वास्तव में यीशु के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद आए पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था। (प्रेरितों 2:30) (2) ताकि वह राजाओं का राजा (1 तीमुथियुस 6:15); और (3) यहूदा के गोत्र का सिंह ठहराया जाकर (प्रकाशितवाक्य 5:5), (4) परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठकर राज्य करे (भजन संहिता 110:1; प्रेरितों 2:34-35)। और फिर हमने प्रेरित यूहन्ना की इस व्यक्तिगत गवाही को भी पढ़ा है, जैसे कि उसने कहा था, कि वह उस समय पहली शताब्दी में स्वयं भी मसीह के राज्य में था।

इन सब बातों के प्रकाश में हम प्रभु यीशु की उस प्रार्थना को याद करते हैं, जिसे उन्होंने क्रूस पर चढ़ाए जाने से एक ही रात पूर्व करके परमेश्वर से कहा था, कि वे जो उनके प्रेरितों के द्वारा उनके सुसमाचार को सुनकर उनके पास आएंगे वे सब एक हों जैसे वे स्वयं और परमेश्वर एक हैं, यीशु ने कहा था:

> "मैं केवल इन्हीं के लिये विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों; जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, जिससे संसार विश्वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है।" (यूहन्ना 17:20-21)।

किन्तु तौभी, आज क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु के दो हज़ार वर्ष बाद भी अधिकांश रूप से मसीह के अनुयायी होने का दावा करनेवाले करोड़ों लोग हज़ारों साम्प्रदायिक टुकड़ों में बंटे हुए हैं; और प्रत्यक्ष है कि संसार यीशु में विश्वास नहीं करता। फूट डालकर लोगों पर राज्य करना एक पुरानी धारणा है, और इसी नियम को शैतान ने भी अपनाकर यीशु के अनुयायियों के बीच में नाना प्रकार की साम्प्रदायिक कलीसियाओं के द्वारा फूट डाल रखी है। सारे संसार में हर एक स्थान पर अलग-अलग नामों से कहलाई जानेवाली साम्प्रदायिक कलीसियाएं बहुतायत से विद्यमान हैं; और अभी भी, ठीक इसी समय जबकि आप यह पढ़ रहे हैं, कहीं पर कोई प्रचारक या पास्टर या पादरी या "रेवरेन्ड" कुछ लोगों से यह कह रहा होगा कि परमेश्वर ने उसे दर्शन देकर उसे एक और नई मण्डली, किसी नए नाम से, आरंभ करने के लिये बोला है ।

हकीकत में तो होना ऐसा चाहिए कि यदि कोई व्यक्ति वास्तव में मसीह का सेवक बनकर सारी विनम्रता के साथ उसके सुसमाचार का प्रचार करना चाहता है, तो उसे सुसमाचार सुनानेवाले फिलिप्पुस की तरह होना चाहिए, जिसके बारे में लिखा है कि वह "परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था" (प्रेरितों 8:12)। अर्थात् उस व्यक्ति को, जो मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना चाहता है, हर एक साम्प्रदायिक

शिक्षा और विचारधारा को त्याग कर खरे मन और विवेक से यह निश्चय करना चाहिए कि मैं केवल **“परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार”** ही प्रचार करूंगा। पूरे निश्चय के साथ केवल परमेश्वर के वचन को ही अपने प्रचार का आधार बनाएं, जिस प्रकार से लिखा है:

> “जो खरी बातें तूने मुझ से सुनी हैं उनको उस विश्वास और प्रेम के साथ, जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाकर रख।” (2 तीमुथियुस 1:13)।

उस तरह की एकता, जिसके लिये मसीह यीशु ने प्रार्थना की थी, (यूहन्ना 17:20–21) केवल तभी संभव हो सकती है, यदि हम सब केवल उन्हीं बातों को मानें और उन्हीं बातों पर चलें जिन्हें यीशु ने अपने चुने हुए प्रेरितों के द्वारा हमें अपने नए नियम की पुस्तकों में दी हैं, जैसे कि यीशु के नए नियम की अंतिम पुस्तक के अंत में लिखा हुआ है:

> “मैं हर एक को, जो इस पुस्तक की भविष्यवाणी की बातें सुनता है, गवाही देता हूं: यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए तो परमेश्वर उन विपत्तियों को, जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। यदि कोई इस भविष्यवाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के वृक्ष और पवित्र नगर में से, जिसका वर्णन इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा।” (प्रकाशितवाक्य 22:18–19)।

मसीह यीशु के सभी सच्चे अनुयायियों को चाहिए कि वे अपना पूरा प्रयत्न करें कि इस पृथ्वी पर हर एक स्थान पर मसीह यीशु की वही मसीहीयत कायम हो जाए जिसका वर्णन हम उसके नए नियम में पढ़ते हैं: और उसके सभी अनुयायियों में उसी प्रकार की एकता आ जाए जिसके लिये यीशु ने प्रार्थना की थी। हमारे प्रचार में इस बात की आवश्यकता पर उसी प्रकार प्रकाश डाला जाए। जिस प्रकार से यहूदा में यिर्मयाह ने प्रचार करके लोगों से कहा था:

> “यहोवा यों भी कहता है: सड़कों पर खड़े होकर देखो, और पूछो कि प्राचीन काल का अच्छा मार्ग कौन सा है, उसी में चलो; और तुम अपने मन में चैन पाओगे।” (यिर्मयाह 6:16)।

जब कुरिन्थुस में की कलीसिया में पौलुस और अपुल्लोस को लेकर साम्प्रदायिकता उभरने लगी थी तो पौलुस ने उन्हें लिखकर इस प्रकार कहा था:

> “हे भाइयो, मैंने इन बातों में तुम्हारे लिये अपनी और अपुल्लोस की चर्चा दृष्टान्त की रीति पर की है, इसलिये कि तुम हमारे द्वारा यह सीखो कि **लिखे हुए से आगे न बढ़ना,** और एक के पक्ष में और दूसरे के विरोध में गर्व न करना।” (1 कुरिन्थियों 4:6)।

प्रत्येक प्रचारक को, जो मसीह से प्रेम करता है चाहिए कि वह केवल वही प्रचार करे जो परमेश्वर की पुस्तक में लिखा है। प्रभु यीशु मसीह और सच्चाई से प्रेम करने वाले इसी बात का प्रचार करें कि वही **यहूदा के गोत्र का सिंह,** और सभी राजाओं का राजा है, और पृथ्वी पर सब लोगों से आग्रह करके कहें कि वे प्रभु यीशु के सुसमाचार को मानकर अपना मन फिराएं और उसके नाम का अंगीकार करें और नया जन्म (यूहन्ना 3:5) प्राप्त करने के द्वारा उसके राज्य में नई सृष्टि बन जाएं, जिसकी स्थापना पिन्तेकुस्त के दिन हुई थी।

पौलुस ने लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व अरियुपगुस में एथेंस के लोगों से इस प्रकार कहा था:

> “इसलिये परमेश्वर ने अज्ञानता के समयों पर ध्यान नहीं दिया, पर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है, और

उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों 17:30-31)।

क्योंकि यदि कोई मन नहीं फिराएगा तो मसीह और परमेश्वर के राज्य में उसकी कोई मीरास नहीं होगी (इफिसियों 5:5)। जैसे कि लिखा है:

"क्या तुम नहीं जानते कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ; न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अंधेर करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।" (1 कुरिन्थियों 6:9,10)।

"गला खोलकर पुकार, कुछ न रख छोड़,
नरसिंगे का सा ऊंचा शब्द कर; मेरी प्रजा को
उसका अपराध अर्थात् याकूब के घराने को
उसका पाप जता दे।" (यशायाह 58:1)।

मन-फिराना

जोएल स्टीफ़न विलियम्स

प्रभु यीशु मसीह ने अपनी शिक्षा में मुख्य रूप से मन-फिराने पर विशेष बल दिया था। (मत्ती 3:2; 4:17; मरकुस 1:15; 6:12)। आरम्भ में मसीही लोगों के प्रचार में भी मन फिराने पर विशेष ज़ोर दिया गया था। (प्रेरितों 2:38; 3:19; 26:20)। स्वर्ग पर वापस जाने से पहले यीशु ने कहा था, कि "यरुशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा" (लूका 24:47)। क्योंकि पाप पृथ्वी पर सब जगह है, इसलिए हर जगह पर लोगों को मन फिराने की आवश्यकता है। पौलुस ने कहा था कि "परमेश्वर सब जगह सब लोगों को मन फिराने की आज्ञा देता है।" (प्रेरितों 17:30)। उद्धार पाने के लिए मन-फिराना अति आवश्यक है। (प्रेरितों 2:38; 3:19; 11:18)। वास्तव में, परमेश्वर चाहता है कि हर एक जन पृथ्वी पर अपना मन फिराकर उसके पास वापस आ जाए। (2 पतरस 3:9)। जब कोई व्यक्ति पाप को छोड़कर परमेश्वर के पास वापस आता है, तो इससे स्वर्ग में आनन्द आता है। (लूका 15:7, 10)

मन-फिराने का अर्थ क्या है? मन फिराने का अर्थ है, अपने मन को प्रत्येक पाप और बुराई से मोड़ लेना, धार्मिक और संसारिक दृष्टिकोण से मन को बदलना। प्रेरित पौलुस ने एक जगह यूँ कहा था: "क्योंकि परमेश्वर-भक्ति का शोक ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है और फिर उससे पछताना नहीं पड़ता।" (2 कुरिन्थियों 7:10)। यहां शोक के कारण पश्चाताप करने का तात्पर्य इस बात से नहीं है, कि यदि कोई व्यक्ति कोई गलत या बुरा काम करते हुए पकड़ा जाए तो वोह इस बात से दुखी हो या पछताए कि मैं पकड़ा क्यों गया। परन्तु बाइबल के अनुसार पश्चाताप करने का अर्थ है, शोकित होकर निश्चय करना कि बुराई से मन फिराकर अब मैं सही काम करूंगा, अर्थात्, न केवल मन में दुखी

होना, पर अपना मन बुराई से फिराना। (मत्ती 21:28-31)। मन फिराकर हम अपने जीवन की दिशा बदलने का निश्चय करते हैं। बाइबल में कई जगह पर इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि जब कोई मन फिराए तो उसे अपने बदले हुए जीवन और कामों से इसको अन्य लोगों के सामने प्रकट करना चाहिए। (मत्ती 3:8; लूका 3:8; प्रेरितों 26:20) मन-फिराना जितना कहने में आसान लगता है, उतना ही करने में कठिन है। मन-फिराने का अर्थ है अपनी मर्ज़ी पर चलना छोड़कर परमेश्वर की इच्छा पर चलने का संकल्प करना।

एक नया आरंभ

रॉनी योए

यीशु ने उसको उत्तर दिया, मैं तुझ से सच-सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। नीकुदेमुस ने उससे कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है? यीशु ने उत्तर दिया, मैं तुझ से सच कहता हूं, जब तब कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता (यूहन्ना 3:3-5)। यीशु ने नीकुदेमुस को नये जन्म का महत्व इस प्रकार बताया था। आज हम इसी आवश्यकता की घोषणा जोर से करते हैं। परन्तु क्या हम सचमुच समझते हैं कि नया जन्म लेने के लिए क्या करना चाहिए? नये जन्म के विषय में पौलुस ने बताया सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गई हैं, देखो, वे सब नहीं हो गई (2 कुरिन्थियों 5:17)। पौलुस को मालूम होना चाहिए था कि वह पापियों में सबसे बड़ा था क्योंकि वह कलीसिया का सबसे बड़ा विरोधी था (1 तीमुथियुस 1:15)। परन्तु वह कलीसिया का सबसे बड़ा हितैषी बन गया। यह सब कैसे हो गया? वह नया जो बन गया था जिस कारण उसे एक नया आरंभ मिला था।

इस प्रकार का नया आरंभ करना जिसमें पिछली बातों को छोड़कर बिल्कुल नये सिरे से आरंभ किया जाता है, क्या यह बहुत बड़ी बात नहीं है? मसीही बनने पर बिल्कुल यही होता है। पुराना जीवन खत्म हो जाता है और नया जीवन आरंभ हो जाता है। मेरे जीवन का उद्देश्य नया हो जाता है और प्रभु मुझे नई दिशा देता हैं मेरा जीवन अब पुराने विचारों और कामों के बीच नहीं घिरा। मैं नया और ताजा हो गया हूं।

जब मैं अपने पिछले पापों से मन फिरा लेता हूं यानी मैं उन से मुड़ता हूं तो अपने पहले जीवन को बदलकर परमेश्वर की ओर मुड़ता हूं। मैंने ठान लिया है कि मैं उसे प्रसन्न करने वाला जीवन जीऊंगा। मुझे अपने पुराने जीवन वाले ढंग से मर जाना यानी उसे छोड़ देना आवश्यक है। रोम में कलीसिया के नाम पौलुस ने लिखा, क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ

गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे (रोमियों 6:3–5)। हम पाप के जीवन से मरते हैं और परमेश्वर के लिए जीने के लिये नये सिरे से जन्म लेते हैं। (2 कुरि. 5:17)

नई सृष्टि के रूप में मुझे अपने कामों को बदलने के लिए अपने विचारों को बदलना आवश्यक है। पौलुस हमें याद दिलाता है, सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ (कुलुस्सियों 3:1–2)। पौलुस पाप के कई व्यवहारों को बताता है, जिन्हें हमें अपने जीवन में से निकालना आवश्यक है, और वह धर्म के कई कामों को बताता है जिन्हें हमें अपने जीवन में अपनाना आवश्यक है (कुलुस्सियों 3:5–17)।

नई सृष्टि होने के कारण, मेरा जन्म एक नये परिवार में हुआ है, मुझे नया नाम मिला है। मेरा यह नाम जो मुझे अब मिला है, किसी भी अन्य नाम से जो मुझे मिल सकता है, श्रेष्ठ है। परमेश्वर ने अपने लोगों को यह विशेष नाम देने की प्रतिज्ञा की थी (यशायाह 62:2)। अब यह नाम मुझे मिल चुका है। मैं परमेश्वर का हूं और मुझे उसी का नाम मिला है, जिस कारण मैं मसीही कहलाता हूं (प्रेरितों 11:26; 1 पतरस 4:16)। हम एक चुना हुआ वंश और राजपदधारी याजकों का समाज और पवित्र लोग और उसकी (परमेश्वर की) निज प्रजा हैं, जिन्हें उसने अंधकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है (1 पतरस 2:9)।

क्या आप ने कभी यह सोचा है कि यदि आपका कोई बड़ा धनवान सगा–सम्बंधी हो और उसकी मृत्यु हो जाए और अपनी सम्पत्ति आपके नाम कर जाए तो क्या होगा? परमेश्वर की संतान के रूप में हम परमेश्वर के बालक और यीशु मसीह के साथ संगी अधिकारी हैं (रोमियों 8 :16, 17)। यह कितनी बड़ी बात है। मुझे जीवन में इससे बढ़कर और क्या चाहिए? परमेश्वर ने इस जीवन में हमें श्रेष्ठ वस्तुएं दी हैं और अपने साथ अनन्तकाल तक रहने की प्रतिज्ञा भी दी है।

नये सिरे से जन्म लेना अर्थात नया जीवन आरंभ करना कितनी बड़ी आशीष है। अब हम परमेश्वर को अपना पिता और मसीह को अपना भाई कहते हैं और उनके पास हम सबके लिए कुछ रखा है। क्या आप ने नया जीवन आरंभ किया है? आज ही नया आरंभ करने का ढंग जानकर परमेश्वर के परिवार में जन्म क्यों नहीं ले लेते? उसके परिवार में जन्म लेने के लिए आपको विश्वास करना है (मरकुस 16:16), पापों से मुड़ना या मन फिराना (लूका 13:1–5)। और अपने इस विश्वास का अंगीकार करना कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है (रोमियों 10:9–10) और फिर पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है (प्रेरितों 2:38)। तब आप नई सृष्टि, यानी परमेश्वर की संतान बन जाएंगे, जिसे प्रतिदिन उसकी सेवा करने का गौरव प्राप्त है।